

भगवान झूलेलाल का अवतरण हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु हुआ था



जैसा कि सर्वविदित है कि प्राचीन भारत का इतिहास बहुत वैभवशाली रहा है। भारत माता को सही मायने में “सोने की चिड़िया” कहा जाता था एवं इस संदर्भ में भारत की ख्याति पूरे विश्व में फैली हुई थी। इसके चलते भारत माता को लूटने और इसकी धरा पर कब्जा करने के उद्देश्य से पश्चिम के रेगिस्तानी इलाकों से आने वाले मजहबी हमलावरों का वार सबसे पहले सिन्ध की वीरभूमि को ही झेलना पड़ता था। अविभाजित भारत में सिंध प्रांत को अपनी भौगोलिक स्थिति के चलते किसी जमाने में भारत का द्वार भी माना जाता था। इसी कारण से सिंध प्रांत ने अरब देशों से भारत पर होने वाले आक्रांताओं के वार भी सबसे अधिक सहे हैं। सिंध के रास्ते ही आक्रांता भारत में आते थे। सिंध की पावन भूमि वैदिक संस्कृति एवं प्राचीन सभ्यता का केंद्र रही है एवं सिंध की पावन धरा पर कई ऋषि, मुनियों एवं संत महात्माओं ने जन्म लिया है। सिंधी समुदाय को भगवान राम के वंशज के रूप में भी माना जाता है। महाभारत काल में जिस राजा जयद्रथ का उल्लेख है वो सिंधी समुदाय का ही था।

आज के बलोचिस्तान, ईरान, कराची और पूरे सिन्धु इलाके के राजा थे श्री दाहिरसेन जी। आपका जन्म 663 ईसवी में हुआ था और 16 जून 712 ईसवी को इस महान भारत भूमि की रक्षा करते हुए उन्होंने बलिदान दे दिया था। श्री दाहिरसेन जी जिन्होंने युद्धभूमि में लड़ते हुए न केवल अपनी प्राणाहुति दी बल्कि उनके शहीद होने के बाद उनकी पत्नी, बहन और दोनों पुत्रियों ने भी अपना बलिदान देकर भारत में एक नयी परम्परा का सूत्रपात किया था। राजा श्री दाहिरसेन जी एक प्रजावत्सल राजा थे। गौरक्षक के रूप में उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। सिंध राज्य के वैभव की कहानियां सुनकर ईरान के शासक हज्जाम ने 712 ईसवी में अपने सेनापति मोहम्मद बिन कासिम को एक विशाल सेना देकर सिन्ध पर हमला करने के लिए भेजा। कासिम ने देवल के किले पर कई आक्रमण किए पर राजा श्री दाहिरसेन जी और उनके हिंदू वीरों ने हर बार उसे पीछे धकेल दिया। परंतु कई बार हारने के बावजूद अंततः मोहम्मद बिन कासिम ने अंतिम हिन्दू राजा श्री दाहिरसेन को विश्वासघात कर हरा दिया जिसके बाद सिंध को अल-हिलाज के खलीफा द्वारा अपने राज्य में शामिल कर लिया गया और खलीफा के प्रतिनिधियों द्वारा सिंध में शासन प्रशासन चलाया गया। इस्लामिक आक्रमणकारियों ने पूरे क्षेत्र में तलवार की नोक पर लगातार हिन्दू धर्मावलम्बियों का धर्मांतरण किया और इस क्षेत्र में इस्लाम को फैलाया।

समय के साथ साथ सिंध पर शासन करने वाले शासक भी बदलते रहे एवं एक समय सिंध की राजधानी थट्टा पर अत्याचारी, दुराचारी एवं कट्टर इस्लामिक आक्रमणकारी मिरखशाह का शासन स्थापित हो गया। उसने सिंध में एवं इसके आसपास के क्षेत्र में इस्लाम को फैलाने के लिए वहां के निवासियों का नरसंहार करना शुरू किया। मिरख शाह जिन सलाहकारों और मित्रों से घिरा हुआ था उन्होंने उसे सलाह दी थी कि यदि आप इस क्षेत्र में इस्लाम फैलाएंगे तो आपको मौत के बाद जन्नत या सर्वोच्च आनंद प्राप्त होगा। इस सलाह को सुनकर मिरख शाह ने उस इलाके के हिंदुओं के पंच प्रतिनिधियों को बुलाया

और उन्हें आदेश दिया कि इस्लाम को गले लगाओ या मरने की तैयारी करो। मिरखशाह की धमकी से डरे हिंदुओं ने इस पर विचार करने को कुछ समय मांगा जिस पर मिरखशाह ने उन्हें 40 दिन का समय दे दिया।

यह सर्वविदित है कि जब मनुष्यों के लिए सारे रास्ते बंद हो जाते हैं तो वह ईश्वर की शरण में आता है। इस मामले में भी कुछ ऐसा ही हुआ। अपने सामने मौत और धर्म पर आए संकट को देखते हुए सिंधी हिंदुओं ने नदी (जल) के देवता श्री वरुण देव भगवान की ओर रुख किया। चालीस दिनों तक हिंदुओं ने तपस्या की। उन्होंने ना बाल कटवाए और ना ही भोजन किया। इस दौरान उपवास कर केवल ईश्वर की स्तुति और प्रार्थना करते रहे। ऐसा कहा जाता है कि उक्त तपस्या के 40वें दिन आकाश से एक वाणी सुनाई दी जिसमें कहा गया कि मैं एक नश्वर के रूप में पृथ्वी पर आऊंगा और नसरपुर के श्री रतनचंद लोहनो के घर माता देवकी जी के गर्भ में जन्म लूंगा। इसके बाद से सिंधी समाज इस 40वें दिन को आज भी धन्यवाद दिवस के रूप में चालीहा साहिब उत्सव मनाते हैं। इस घटना के 3 महीने के बाद 950 ईसवी में आसू माह (आषाढ) की दूसरी तिथि में माता देवकी जी ने गर्भ में शिशु होने की पुष्टि की। इसके बाद पूरे हिन्दू समाज ने जल देवता की प्रार्थना कर उनका अभिवादन किया। चैत्र माह के शुक्ल पक्ष द्वितीया के दिन बेमौसम मूसलाधार बारिश हुई और माता देवकी ने एक चमत्कारी शिशु को जन्म दिया। इस शिशु का नाम बचपन में उदयचंद रखा गया। उदयचंद को उडेरोलाल भी कहा जाने लगा। नसरपुर के लोग प्यार से बच्चे को अमरलाल (Immortal) भी कहते थे। जिस पालने में वह रहते थे वह अपने आप झूलने लगता था, इसके बाद ही उन्हें झूलेलाल कहा जाने लगा, और वह इसी नाम से लोकप्रिय हुए। झूलेलाल के चमत्कारों को देखते हुए सिंध के लोग उन्हें भगवान के रूप में मानने लगे।

भगवान झूलेलाल ने अपने चमत्कारिक जन्म और जीवन से न सिर्फ सिंधी हिंदुओं के जान-माल की रक्षा की बल्कि हिन्दू धर्म को भी बचाए रखा। मिरख शाह जैसे न जाने कितने इस्लामिक कट्टर पंथी आए और धर्मांतरण का खूनी खेल खेला लेकिन भगवान झूलेलाल की वजह से सिंध में उस दौर में मुस्लिम आक्रांताओं के कहर पर अंकुश लगा रहा।

भगवान झूलेलाल ने अपने भक्तों से कहा कि मेरा वास्तविक रूप जल एवं ज्योति ही है। इसके बिना संसार जीवित नहीं रह सकता। आज भगवान झूलेलाल के अवतरण दिवस को सिंधी समाज चेटीचंड के रूप में बड़े उत्साह एवं जोश के साथ मनाता है। चेटीचंड हिन्दू पंचांग के अनुसार चैत्र नवरात्रि के दूसरे दिन अर्थात् चैत्र शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है। चेटीचंड के दिन ही सिंधी नव वर्ष भी प्रारम्भ होता है। चेटीचंड के दिन सिंधी स्त्री-पुरुष तालाब या नदी के किनारे दीपक प्रज्वलित कर जल देवता की पूजा अर्चना करते हैं। चेटीचंड के दिन सिंधी समाज के श्रद्धालु बहिराणा साहिब बनाते हैं। भव्य शोभा यात्रा निकालते हैं और 'छेज' (जो कि गुजरात के डांडिया की तरह लोकनृत्य होता है) के साथ झूलेलाल की महिमा के गीत गाते हैं। ताहिरी (मीठे चावल), छोले (उबले नमकीन चने) और शरबत का प्रसाद बांटा जाता है। शाम को बहिराणा साहिब का विसर्जन कर दिया जाता है।

आज सिंधी हिंदुओं द्वारा भगवान झूलेलाल को अपना उपास्य देव मानकर हैं उन्हें इष्ट देव कहा जाता है। सिंधी हिन्दू भगवान झूलेलाल को वरुण (जल देवता) का अवतार मानते हैं। वरुण देव को सागर के देवता, सत्य के रक्षक और दिव्य दृष्टि वाले देवता के रूप में सिंधी समाज पूजता है। उनका विश्वास है

कि जल से सभी सुखों की प्राप्ति होती है और जल ही जीवन है। जल-ज्योति, वरुणावतार, झूलेलाल सिंधियों के ईष्ट देव हैं जिनके आगे दामन फैलाकर सिंधी समाज यही मंगल कामना करता है कि सारे विश्व में सुख-शांति कायम रहे और चारों दिशाओं में हरियाली और खुशहाली बनी रहे।



प्रहलाद सबनानी
सेवा निवृत्त उप महाप्रबंधक,
भारतीय स्टेट बैंक
के-8, चेतकपुरी कालोनी,
झांसी रोड, लखनऊ,
ग्वालियर – 474 009
मोबाइल क्रमांक – 9987949940
ई-मेल – psabnani@rediffmail.com